

उत्तर देने को तैयार हैं तो विदेश मंत्री ने कहा था कि मैं आज शाम को नहीं दे सकूंगा लेकिन कल मैं उत्तर दे दूंगा तो फिर अध्यक्ष महोदय, आप इस को और आगे क्यों बढ़ा रहे हैं ? अब तक सरकार ने पूरी तैयारी कर ली होगी तब क्या आपत्ति है . . .

अध्यक्ष महोदय : इस वक्त दूसरे हाउस में है ।

in Hindi, might not have been very clear to some who heard him. In any case we have learnt with deep regret that Mr. Maurya was wrongly reported.

We hope that this unqualified expression of regret will be acceptable both to the Speaker and to Mr. Maurya."

I think this regret is sufficient and the matter may be closed. (Inter-ruption) Order, order. Shri Fakhrudin Ahmed.

12.33 hrs.

QUESTION OF PRIVILEGE

APOLOGY BY ASSOCIATE EDITOR, HINDUSTAN TIMES *re.* MISREPRESENTATION OF LOK SABHA PROCEEDINGS

Mr. Speaker: The House will recall that on the 18th March, 1966, Shri B. P. Maurya had raised a question of privilege in the House, alleging misrepresentation of certain remarks made by him in the House on the 17th March, 1966, by the *Hindustan Times* (Evening News) of that date. I had then said that I would ask the Editor of the *Hindustan Times* to state that what he had to say in the matter.

I have now to inform the House that the Associate Editor of the *Hindustan Times*, in his reply dated the 22nd March, 1966, has stated as follows:

"The report in question was received by us from the United News of India as part of its normal services and was published by us in good faith. We had no reason to doubt the veracity and accuracy of the report at that time. We had no intention whatsoever of attributing to Mr. Maurya anything he did not mean or say. It will no doubt have been noticed from the extracts of the proceedings enclosed with your letter that Mr. Maurya himself admitted that his remarks,

श्री श्रीयं (अलीगढ़) : एक शब्द मुझे कहने की इजाजत दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : मामला खत्म हो गया अब क्या जरूरत है ?

श्री श्रीयं : श्रीमन्, मुझे नींद तक नहीं आती । मुझे डिप्टी स्पीकर साहब ने वैसे ही निकाल दिया । मैं ने कोई ऐसी बात नहीं कही थी । दरअसल उन्हें हिन्दी समझ में नहीं आती, वह मेरी हिन्दी समझ नहीं पाये और उन्होंने मुझे बेकार में निकाल दिया ।

अध्यक्ष महोदय : अच्छा ।

श्री श्रीयं : यह बड़ा गलत तरीका है यह कोई अच्छा तरीका नहीं है ।

12.35 hrs.

Re. POINT OF ORDER

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) : मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय : पहली चीज खत्म हुई और दूसरी चीज शुरू हुई तो इस बीच में व्यवस्था कहां आ गई ?

डा० राम मनोहर लोहिया : 376 के मातहत इस संसद् के कार्यक्रम के ऊपर आप के सामने मैं ने पिछली दफा भी कई दिन पहले